नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

प्रेमचंद जयंती पर विचार-गोष्ठी एवं गीत-संध्या का हुआ आयोजन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के भगत सिंह छात्रावास में प्रेमचंद जयंती के अवसर पर उन्हें

स्मरण करते हुए गीत-संध्या एवं व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के

प्रति कुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में शामिल प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने प्रेमचंद जयंती के अवसर पर वर्तमान संदर्भ में प्रेमचंद की महत्ता एवं प्रासंगिकता की चर्चा करते हुए उनके

साहित्यिक अवदान पर विधिवत प्रकाश डाला। प्रेमचंद की कहानियों, उपन्यासों, निबंधों एवं नाटकों से गुजरते हुए उन्होंने प्रेमचंद से जुड़े कई छुए-अनछुए मौजू प्रसंगों पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दूसरे हिस्से में चर्चित गीतकार एवं कवि विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर एवं लोकप्रिय गीतकार डॉ. रामानुज अस्थाना, हिंदी नवगीत के सशक्त हस्ताक्षर एवं विवि. के

अतिथि लेखक श्री बुद्धिनाथ मिश्र, अनुवाद विभाग के सहायक प्रो. डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने अपनी कविताओं, गीतों एवं गजलों से कार्यक्रम में समां बांध दिया।

प्रतिकुलपति एवं चर्चित गीतकार प्रो. आनंद वर्धन शर्मा की कविता हीरामन एवं गीत 'फिर से नई सुबह

तुम लिख दो फिर से लिख दो शाम', डॉ. रामानुज अस्थाना के गीत 'दर्द की ये जुबां अकेली है', 'शीतलता चंद्रमा में समाई हुई है', एवं बुद्धिनाथ मिश्र का गीत 'दूँगी तुम्हें नजराना कोई जाने ना' एवं 'नांच गुजरिया नांच' का श्रोताओं ने आनंद लिया। इन गीतों में विविधता के साथ-साथ प्रेम, प्रतिरोध, संवेदना एवं सौंदर्य के अलग-अलग रंग दिखे। कार्यक्रम के प्रारंभ में मनीष एवं श्याम के साथ यदुवंश और रोहित ने जनवादी गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम

की अध्यक्षता कर रहे प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने प्रेमचंद पर चर्चा करते हुए कहा कि जब तक भारतीय समाज नहीं बदलेगा, तब तक प्रेमचंद प्रासंगिक रहेंगे। उन्होंने बताया कि उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। प्रेमचंद्र को जो स्थान मिलना चाहिए था, वह मिला है और वह आगे और महत्वपूर्ण होता जाएगा। उन्होंने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम लगातार होने चाहिए, ये हमें ऊर्जावान बनाते हैं। इस कार्यक्रम का संचालन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के शोध-अध्येता प्रदीप त्रिपाठी ने किया। इस कार्यक्रम के आयोजन में हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर एवं भगत सिंह छात्रावास अधीक्षक डॉ. रूपेश कुमार सिंह की महती भूमिका रही। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के तमाम शिक्षक प्रो. अरुण त्रिपाठी, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. वीरेंद्र यादव, डॉ. हुनगुंद, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता एवं छात्र-शोधार्थी मौजूद थे। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन छात्रावास अधीक्षक डॉ. रूपेश कुमार सिंह ने किया।